लिखना : मौखिक से मौलिक की ओर

अवनीश कुमार मिश्र

भाषा के विविध कौशलों में लिखने का कौशल, सीखने-सिखाने के लिहाज़ से थोड़ा जटिल है और कक्षा शिक्षण में यह विविध प्रयासों की माँग करता है। लिखने की प्रक्रिया में सोचने, बोलने और पढ़ने जैसी प्रक्रियाएँ भी साथ चलती हैं। सोचा और बोला हुआ लिखा जा सकता है, यह विश्वास और भरोसा बिठाने में समय लगता है। लिखने से पहले विचारों का संकलन, व्यवस्थापन और फिर लिखने के दौरान अपने लिखे हुए को देखना-पढ़ना और दिशा व प्रवाह बनाना भी एक कौशल है जो सीखना होता है। अवनीश कुमार ने अपने इस आलेख में लिखना सीखने-सिखाने के विभिन्न पहलुओं पर अनुभवजन्य टिप्पणियाँ की हैं। लिखना सीखने के चरण, उसके लिए प्रयुक्त सामग्री तौर-तरीक़ों पर लेखक ने विस्तार से लिखा है। साथ ही बच्चों के लेखन के विविध नमूनों से अपनी बात को समझाने का प्रयास किया है। सं.

भाषा एक ऐसा औज़ार है, जिसका उपयोग हम जीवन को समझने, उससे जुड़ने और अर्जित अनुभवों को व्यक्त करने के लिए करते हैं। वह अभिव्यक्ति के साथ हमारे सोचने, समझने और दुनिया को देखने का नज़रिया भी देती है। सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना भाषा के बुनियादी कौशल हैं, जो साथ-साथ बरते जाते हैं। इन बुनियादी कौशलों में तर्क, अनुमान, अभिव्यक्ति, कल्पना, अवलोकन आदि पहलू अन्तर्निहित होते हैं। एनसीईआरटी के हिन्दी पाठ्यक्रम में भाषा सीखने के कौशलों और उद्देश्यों के अनुसार "विद्यार्थियों में बोलने का कौशल इस सीमा तक विकसित हो चुका हो कि वे औपचारिक चर्चाओं में बेझिझक होकर बोल सकें। वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट, व्यवस्थित और असरदार ढंग से अभिव्यक्त कर सकें। भाषा पर उनका इतना अधिकार हो चुका हो कि वे जीवन की विविध स्थितियों से आत्मविश्वासपूर्वक गुज़र सकें। विभिन्न प्रकार के औपचारिक व अनौपचारिक सन्दर्भों के अनुसार उचित शैली चुन सकें। भाषा को जानदार बनाने के लिए उर्दू और आंचलिक शब्दों का इस्तेमाल करने की समझ उनमें हो। पढ़ना, सुनना, लिखना, बोलना– इन चार प्रक्रियाओं में विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान की सहायता से अर्थ की रचना कर पाएँ और कही गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ।"

सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने का अन्तर्सम्बन्ध

सुनने और बोलने के कौशलों को परिवेश में जन्म से ही अर्जित किया जाता है। यह अर्जन अनवरत चलता रहता है। सांकेतिक भाषा से मौखिक भाषा और इन सबसे जुड़ी हुई लिखित भाषा की यात्रा जीवन में घटित होने वाली आश्चर्यजनक घटनाएँ हैं।

गुडमैन ने पढ़ने को मनोभाषाई अटकलों का खेल माना है। बच्चे पढ़ना तभी सीखते हैं जब वह उनके लिए मज़ेदार और रोचक होता है। इस प्रकार, विविध तरह के लेखन को समझने

के लिए बच्चों की आयु व स्तर के अनुसार रोचक, पठनीय और विविध टेक्स्ट, प्रिंट सामग्री परिवेश में उपलब्ध होनी आवश्यक है। इस दिशा में बाल साहित्य, रीडिंग कॉर्नर, विभिन्न प्रकार का टेक्स्ट, अख़बार, विज्ञापन, पोस्टर, दीवार पत्रिका, बाल अख़बार आदि के इस्तेमाल जैसे सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं। यह अलग बात है कि इनका भाषा शिक्षण में कहीं बहुत ही सामान्य इस्तेमाल किया जा रहा है, कहीं नहीं भी किया जा रहा है तो कहीं बेहतर इस्तेमाल भी हो रहा है। जहाँ पर बेहतर इस्तेमाल हो रहा है, वहाँ बुनियादी कौशलों में काफ़ी विकास देखने को मिलता है। बेहतर इस्तेमाल से आशय बच्चों को सुनने-सुनाने का अवसर देना, प्रत्येक दिन पढ़ने की घण्टी का उपयोग, स्तर अनुसार विभिन्न प्रकार के रोचक टेक्स्ट की उपलब्धता, तय योजना अनुसार निरन्तरता में पर्याप्त समय, अवसर और आज़ादी देना आदि पहलू शामिल होते हैं। कुल मिलाकर जितना भाषा-समृद्ध माहौल उपलब्ध होता है, पढ़ने और मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर उपलब्ध होते हैं, लिखने का प्रयास उतना ही सहज, सार्थक व सारगर्भित होता है। पढ़ने की प्रक्रिया में शामिल होने से अर्थ निर्माण, लिपि-ध्वनि सम्बन्ध की पहचान, शब्द भण्डार, प्रवाह, वाक्य संरचना की समझ, विविध लेखन शैलियों की समझ, साहित्यिक समझ और पढ़े हुए का जीवन में उपयोग कर पाने जैसे अनेक कौशल विकसित होते हैं। जिस प्रकार पढ़ना जीवन के विभिन्न पहलुओं और इसके बदलते रंगों को समझना है, उसी प्रकार लिखना अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण है।

लेकिन वर्तमान में अधिकतर भाषा शिक्षण से जुड़ी मान्यताएँ इस समझ से बहुत अलग दिखाई देती हैं। जैसे— कक्षा एक-दो में पढ़ना-लिखना केवल लिपि ज्ञान तक ही सीमित रखना, मौखिक कौशलों पर कम ध्यान देना, पाठ्यपुस्तकों का बेहद कम इस्तेमाल होना, बच्चों के जीवन अनुभवों को भाषा संसाधन न समझना आदि। इसके साथ ही कुछ विसंगतियाँ भी इसके लिए ज़िम्मेदार हैं, जैसे— समझ और अर्थ के साथ पढ़ना-लिखना सीखने की शुरुआत न करना, अशुद्धियों का डर और व्याकरण की शिकायत, सोद्देश्य समूहन और संवाद की कमी, भाषा शिक्षण का केवल एक कालखण्ड तक सीमित होना, पुस्तकालय और भाषा-समृद्ध वातावरण का अभाव, भाषा सिखाने का एकमात्र साधन पाठ्यपुस्तक को मानना, भाषा नक़ल से सीखी जाती है ये मान्यता रखना, आदि। ये मान्यताएँ बच्चे के सीखने में कई तरह की चुनौतियाँ पैदा करती हैं।

इसके अलावा कक्षा शिक्षण की कुछ रूढ़ियाँ भी इसमें अपनी भूमिका निभाती हैं, जैसे— एकतरफ़ा आदेशात्मक शिक्षण, लाल स्याही और ग़लतियों पर ही निगाह रखना, आदि। जबकि इस सम्बन्ध में पाठ्यपुस्तक *(रिमझिम-1)* इस बात पर ज़ोर देती है, "यह किताब केवल एक पाठ्यपुस्तक ही नहीं, बल्कि बच्चों के साथ मिलकर कविता गाने, कहानी सुनने-सुनाने, भाषा के रोचक खेल खेलने का एक ज़रिया भी है। किताब में इस बात के संकेत भी मिलते हैं कि बच्चों से बातचीत करने के लिए, उन्हें स्वयं सोचकर कुछ कहने, पढ़ने-लिखने के लिए, बेझिझक होकर स्वयं को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास पैदा करने के लिए घर और स्कूल में कितने ही अवसर ढूँढ़े जा सकते हैं।" इसी तरह *रिमझिम-5* कहती है, "शिक्षक से यह अपेक्षा भी की जाती है कि प्रत्येक बच्चे

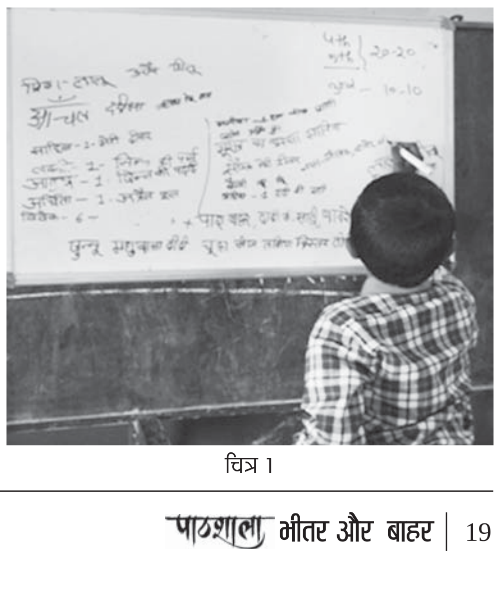

चित्र 1

के भाषाई कौशलों की जाँच ऐसे करे कि कोई भी बच्चा न छूटे। इन सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए यद्यपि इस पुस्तक में प्रचुर मात्रा में सामग्री दी गई है, लेकिन फिर भी दी गई विषय सामग्री से इतर सामग्री भी बच्चों को दें। क्योंकि भाषा के उद्देश्य एक पाठ्यपुस्तक से पूरे नहीं किए जा सकते। प्राथमिक स्तर के अन्त तक अपेक्षा है कि बच्चा क़िस्म-क़िस्म का लेखन कर सके और भाषा को प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त शब्द का चुनाव व उपयोग कर सके। इसीलिए उनका तरह-तरह की रचनाओं से परिचय हो यह महत्त्वपूर्ण होगा।

लेखन की आवश्यकता

किसी भी भाषा में, लेखन का अर्थ है मन की बातों / विचारों / उधेड़बुन को काग़ज़ पर उकेरना। आमतौर पर लेखन एक व्यक्तिगत मानसिक-मनोवैज्ञानिक और सौन्दर्यात्मक प्रक्रिया मानी जाती है। लेखन से तात्पर्य ऐसे चिह्न या आकृतियाँ बनाने से है, जिसे दूसरे समझ पाएँ। यह केवल इतना भर नहीं है, बल्कि लेखन भावों और विचारों की अभिव्यक्ति है। कुछ विचार ऐसे होते हैं जिन्हें हम बोलने की अपेक्षा लिखकर अभिव्यक्त करने में स्वयं को अधिक सहज महसूस करते हैं। यह भी कि वाचिक की अपेक्षा लिखना अधिक स्थाई क्रिया है। लिखे हुए को हम अपनी इच्छा से कभी भी, कहीं भी देख सकते हैं। आसान शब्दों में कहा जाए तो लिखना, कहने का एक ख़ास अन्दाज़ है। यह अपने-आप से जुड़ने और दुनिया को समझने का एक बेहतरीन तरीक़ा है। कृष्ण कुमार लिखते हैं, "लिखना एक तरह की बातचीत ही है। लिखते वक़्त हम किसी से संवाद कर रहे होते हैं, हालाँकि प्राय: वह व्यक्ति हमारे सामने नहीं होता। बहुत-सी बातें हम किसी सूचना, विचार या याद को सुरक्षित रखने के लिए लिखते हैं। यदि मैं अपने आज के अनुभव एक डायरी में लिखूँ तो मैं इन अनुभवों को किसी और दिन पढ़ने की आशा में सुरक्षित रख सकूँगा।"

लिखना विभिन्न उद्देश्यों के लिए होता है। सूची बनाना, रिपोर्ट लिखना, किसी सवाल का जवाब लिखना, सवाल लिखना या कविता और कहानी को लिखना, एक ही तरह का लिखना नहीं है। इनमें से हर उद्देश्य के लिए लिखने की प्रक्रिया में अन्तर होता है। लिखने के कौशल को विकसित करने के लिए बच्चों का ध्यान भाषा के अलग-अलग रूपों की ओर दिलाने की आवश्यकता होती है ताकि वे भाषा की बारीक़ियों को पकड़ सकें और लिखते समय उनका उचित उपयोग कर सकें। भाषा के इन विभिन्न रूपों को देखने-समझने का मौक़ा बच्चों को बाल साहित्य और विभिन्न प्रकार के टेक्स्ट से ही मिल सकता है।

पाठ्यपुस्तकों के रोचक अभ्यास प्रश्नों को केवल परीक्षा की तैयारी कराने तक सीमित न मानकर भाषाई दक्षताओं को निखारने के सन्दर्भ में उपयोग करने की आवश्यकता है। अतः कक्षावार या स्तरानुसार रोचक विषय सामग्री का चयन किया जाना चाहिए, साथ ही बच्चों को हिन्दी की विभिन्न शैलियों और रंगतों से परिचित होने के बाद उसी प्रकार के लेखन के अवसर भी दिए जाने चाहिए। पढ़ने की तरह ही लिखने में भी समझ शामिल है और समझ के साथ लिखने के लिए यह अपेक्षित होता है कि उसमें अपने विचारों, भावनाओं या अनुभवों को स्वयं अपनी भाषा में अपने तरीक़े से लिख सकें।

लिखने की शुरुआत

लिखना एक कौशल है और उसपर अधिकार हासिल करना तभी सम्भव हो पाता है जब बच्चों में अपने लेखन के प्रति आत्मविश्वास आता है, उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। क़िस्म-क़िस्म के लेखन के नमूनों से गुज़रने का अवसर मिलता है।

बच्चों का अपने हाथ से एक छोटी लकीर खींचना उनके जीवन में पहली बार घटित होने वाली दिलचस्प घटना है और एक बड़ा क़दम है। मिट्टी के खिलौने बनाना, मिट्टी में बार-बार उँगली फिराना, सुलझी बातों की उलझी आकृतियाँ बनाना, खेल-खेल में सृजन करना, स्कूल में दीवार का इस्तेमाल करने जैसी

गतिविधियों द्वारा हाथ की माँसपेशियों को लचीली बनाने और संरचना को गढ़ने में मदद मिलती है। शुरुआती प्रयासों से ही जब बच्चा आड़ी तिरछी रेखाएँ खींचना आरम्भ करता है, तभी से वह अपने विचारों को प्रकट करना भी शुरू कर देता है। गोदा-गादी लेखन भले ही मानक भाषा के फ्रेम में नहीं समझा जाता, पर उसमें बच्चों की अपनी दुनिया के अनुभव होते हैं। ध्वनि और उसके निर्धारित चिह्नों में सम्बन्धों की समझ धीरे-धीरे विकसित होती है। बच्चे जब कभी ध्वनि और संकेतों के सम्बन्ध को समझ ही रहे होते हैं, कई बार वे शब्दों को अधूरा ही छोड़ देते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि कई बार बच्चे के मस्तिष्क में बातें इतनी जल्दी-जल्दी आगे बढ़ती हैं कि उनकी कलम उस गति का मुक़ाबला नहीं कर पाती। ऐसी स्थिति में उनका सार्थक प्रिंट, बाल साहित्य आदि सामग्रियों से जुड़ाव जितना अधिक होगा और पढ़ने-लिखने के निरन्तर मौक़े जितने अधिक मिलते रहेंगे, उतना ही उनका लेखन परिपक्व होगा। सामान्य-सी बातचीत को, रोज़मर्रा के शब्दों, उनके नाम, आदि को लिखने का हिस्सा बनाए जाने की ज़रूरत है। शब्दों / अक्षरों से खेलने व ग़लती करने की आज़ादी, अवसर और समय देना उचित प्रतीत होता है। यह पूरी प्रक्रिया अपार धैर्य, समय और ऊर्जा की माँग करती है। लेखन में रुचि पैदा होना इस बात पर निर्भर करता है कि सुझाए गए तरीक़े कितने आकर्षक, लुभावने और रोचक हैं। लेखन की शुरुआत में किसी तरह के जवाब की कोई आधिकारिक माँग, अनुशासन या नियम नहीं होना चाहिए। मुक्त लेखन के अवसर, प्रोत्साहन और लेखन पर ढेर सारी बातचीत, उनकी भावनाओं व विचारों को समझने का प्रयास करना चाहिए।

लेखन से पहले की तैयारी

लेखन को विकसित करने के लिए उससे सम्बन्धित अनेक गतिविधियाँ हो सकती हैं, जैसे– शुरुआत के लिए किसी ऐसी कहानी का चुनाव करना जिसे सभी बच्चे जानते हों, उसपर संवाद करना, उसमें से किसी एक पात्र का चित्र बनाना और उसपर चार-पाँच वाक्य लिखना, अव्यवस्थित वाक्यों को व्यवस्थित करते हुए एक क्रम में लगाना, किसी पढ़े हुए पाठ को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखना, किसी नई कहानी का लेखन करना, किसी कहानी पर अपनी टिप्पणी लिखना, किसी एक शीर्षक पर आधारित सभी बच्चों के मौलिक लेखन को एक हैण्डबुक की शक्ल देना, किसी प्रासंगिक विषय पर प्रश्नोत्तरी (क्यों और कैसे) तैयार करना, किसी अधूरी कहानी का अपनी कल्पना और अनुमान के आधार पर अन्त तय करना, छोटी टीम में लिखित रूप में कहानी तैयार करना (एक-एक वाक्य जोड़ते हुए कहानी

चित्र 2

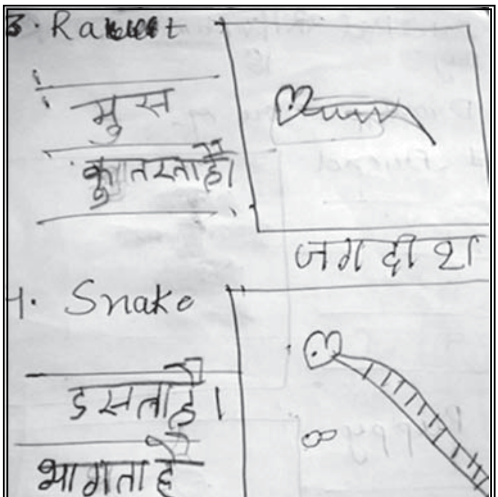

चित्र 3

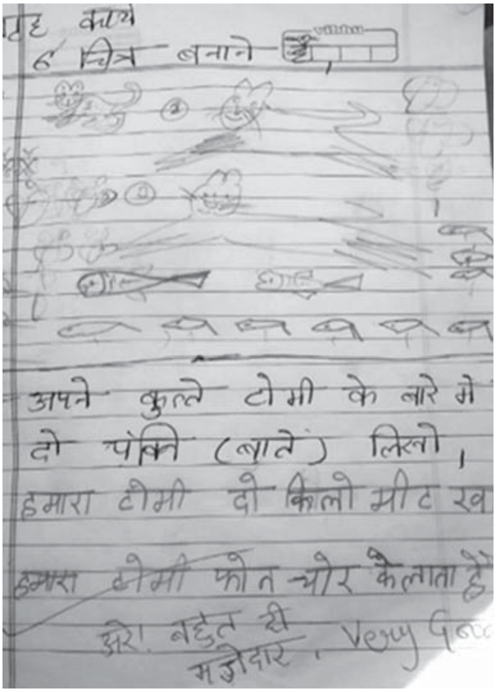

चित्र 4

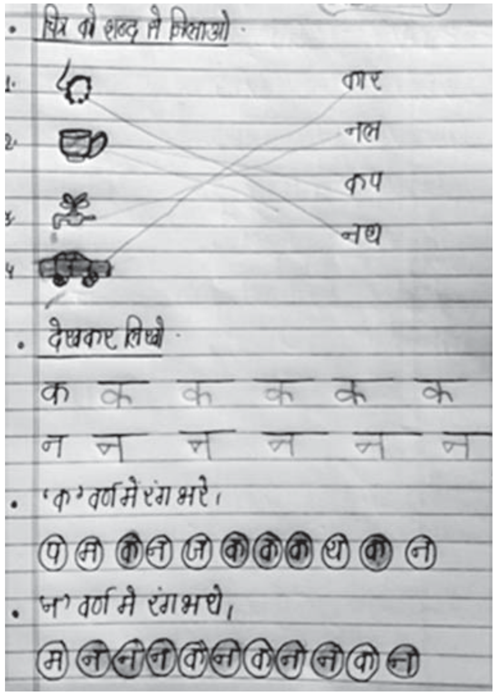

चित्र 5

पूरी करना) आदि। नमूने के तौर पर कक्षा तीन के बच्चों के लेखन की समझ को जानने के लिए परिवेश से जुड़ी कविता, कहानी, पत्र लेखन और चित्रों का सहारा लिया गया। एक ही विषय पर बच्चों की समझ और जवाब अलग-अलग तरह के थे। जिन स्कूलों में इस तरह के लेखन के अवसर निरन्तरता में उपलब्ध कराए जाते हैं, वहाँ के बच्चों की लेखन की समझ अपेक्षाकृत बेहतर दिखाई देती है।

लेखन की प्रक्रिया

लिखी हुई किसी सामग्री को जस का तस उतार देना या केवल प्रिंट के रूप में लिखी सामग्री या पढ़े हुए को लिखना 'उत्पाद लेखन' है। उत्पाद लेखन का उद्देश्य है कि कैसे सही तरीक़े से लिखना है इसमें ज़ोर शुद्धता पर होता है। इसमें छात्रों को नक़ल करने के लिए पाठ दिया जाता है और आमतौर पर पाठ्यपुस्तकों के पाठों का उपयोग किया जाता है, जो लेखन के लिए कई तरह के बने-बनाए मॉडल सुझाते हैं। जैसे– यदि एक औपचारिक पत्र का अध्ययन करते हैं, तो बच्चों का ध्यान पैराग्राफ़ के महत्त्व और औपचारिक अनुरोध करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा (जैसे– 'यदि आप होंगे तो मैं आभारी रहूँगा') पर दिलाया जाता है। विचारों को एक बँधे हुए फ्रेम में रखना सीखने के लिए ई-मेल, औपचारिक पत्र, रिपोर्ट लेखन आदि में इसका प्रयोग किया जाता है।

एक अन्य तरह का लेखन प्रक्रियात्मक लेखन है। इसमें बच्चों को लिखने की स्वतंत्रता होती है कि वे क्या लिखना चाहते हैं। यह उनके सोचने के कौशल को विकसित करता है और उनकी रचनात्मकता को सुव्यवस्थित और बेहतर बनाने की दिशा में सहायक होता है। इसमें सोचने, योजना बनाने, लिखने, सुधार करने और सम्पादन करने के अनेक अवसर मिलते हैं। जिससे बच्चे यह समझ बना पाएँ कि वे क्या लिखने जा रहे हैं। यह भी समझ पाएँ कि टेक्स्ट अपने अन्तिम संस्करण में आने से पहले ड्राफ्ट कैसे बनता है, उसमें किस तरह से संशोधन किया जाता है, सम्पादित कैसे किया जाता है, और अपने काम पर कैसे प्रतिक्रिया दी जाती है व दूसरों से कैसे प्राप्त की

जाती है। इस प्रक्रिया में व्याकरणिक शुद्धता पर उतना ज़ोर नहीं दिया जाता, जितना कि लिखने के प्रति सजगता, सहजता और सन्दर्भ पर। इसमें लेखन के शिल्प के अनुरूप विचारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। कभी भावों की और कभी-कभी इसमें कल्पनाओं, वास्तविकताओं, जीवन के विभिन्न पहलुओं, सामाजिक स्थितियों, घटनाओं आदि का समावेश होता है। पाठक को सोचने के लिए, सूचना-जानकारी देने, प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष पहलुओं को शामिल करते हुए किसी उद्देश्य विशेष से परिचित कराने के लिए, मनोरंजन के लिए, किसी समस्या से अवगत कराने, पाठकों की विचारधारा को समृद्ध करने और उनका विश्वास जीतने एवं उसे बनाए रखने आदि के लिए इस तरह के लेखन का प्रयोग किया जाता है। सबसे अधिक महत्त्व की बात यह है कि बच्चा जो सन्देश कहना चाहता है वह सही रूप से सम्प्रेषित हो जाए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि एक बेहतरीन कविता, कहानी, आदि किसी एक दिन के लेखन का परिणाम नहीं होती, बल्कि कई प्रक्रियाओं के बाद कोई रचना स्थायित्व पाती है। यहाँ तक कि किसी किताब को कोई नाम देने, किसी कहानी या कविता को कोई उचित शीर्षक देने में भी अनेक बार संशोधन करना पड़ता है। *सीखने के प्रतिफल* दस्तावेज़ कहता है कि "लिखना एक सार्थक गतिविधि तभी बन पाएगी जब बच्चों को अपनी भाषा, कल्पना, दृष्टि से लिखने की आज़ादी मिले। बच्चों को ऐसे अवसर मिलें कि वे अपनी भाषा और शैली विकसित कर सकें, न कि ब्लैकबोर्ड, किताबों या फिर शिक्षक के लिखे हुए की नक़ल करते रहें।" प्रक्रियात्मक लेखन में बच्चों के स्वतंत्र सोचने, अभिव्यक्त करने की झलक देखी जा सकती है। इस प्रकार के लेखन में उनके परिवेश और पूर्व अनुभव की झलक भी आसानी से दिखाई दे जाती है।

लिखने का विस्तार

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार, "लिखने का महत्त्व सर्वविदित है, लेकिन पाठ्यचर्या में इसको लेकर नवाचार अपनाने की ज़रूरत है। शिक्षकों का ज़ोर इस बात पर होता है कि बच्चे सही तरीक़े से लिखें। लिखने के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति को महत्त्वपूर्ण नहीं माना जाता। शिक्षकों को इस रूप में प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है कि वे लेखन को लेखन की तरह समझें, न कि कार्यालयी कौशल की तरह। आरम्भिक वर्षों में लिखने की क्षमता का विकास, बोलने, सुनने और पढ़ने की क्षमता की संगति में होना चाहिए। ऐसे प्रयास भी आवश्यक हैं जिनसे पत्र लेखन और निबन्ध लेखन की घिसी-पिटी गतिविधियों पर रोक लगाकर शिक्षा में कल्पना और मौलिकता को महत्त्वपूर्ण भूमिका दी जाए।" प्रारम्भिक स्तर पर मुख्यत: मौखिक रूप से सीखी गई भाषा को सुदृढ़ करने के लिए संवाद लेखन, घटनाओं, अनुभवों, यात्रा विवरण, मित्र को पत्र आदि का उपयोग करना चाहिए। आँखों देखी घटनाओं को शब्दबद्ध करने से बच्चों में यह अहसास पैदा होता है कि बोले हुए को भी शब्दों और वाक्यों में फ्रेम किया जा सकता है। इस उम्र में बच्चों के लेखन के सारे प्रयास शब्द की ध्वनि और बोले गए ढंग (शैली / उच्चारण) या परिवेश के शब्दों से प्रभावित होते हैं। यदि बच्चे सुलेख लिख रहे होते हैं तो वहाँ सही उच्चारण, सही परिवेशीय

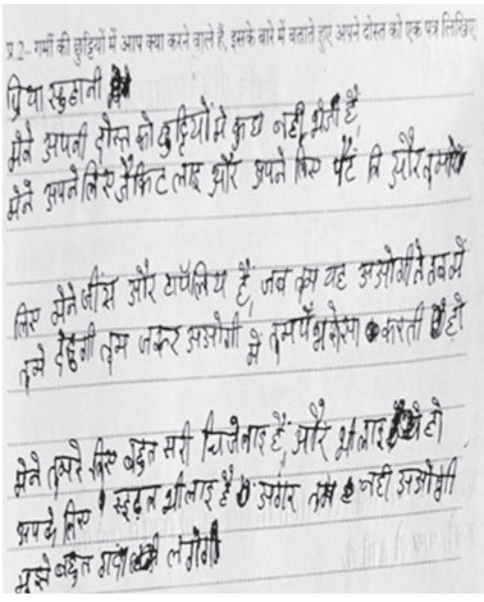

चित्र 6 : पत्र लेखन का नमूना

शब्दों का चयन बहुत मायने रखता है। लेकिन यह समझना भी ज़रूरी है कि लिखित भाषा का मतलब केवल बोलने वाली भाषा को लिख देना भर नहीं है। यह कहीं अधिक सतर्कता और समझ की माँग करता है। मौखिक बातचीत में बात करने वाले आमने-सामने होते हैं और यह एक साझे सन्दर्भ पर होती है। लेकिन लिखित भाषा में इसी संवाद को प्रस्तुत करने के लिए हमें बातचीत के साथ ही साथ उस विषय के सन्दर्भ, संवाद के दौरान की स्थिति और इस दौरान होने वाले हाव-भाव, संकेतों और इशारों को भी लिखना होता है। हम पाएँगे कि दोनों में उपयोग किए गए शब्दों और वाक्यों की बुनावट भी भिन्न होती है। लिखने के विस्तार के रूप में स्वयं से लेखन का एक वाक्य बनाना, साधारण सवालों के जवाब अपने शब्दों में देना, एक पत्र या किसी व्यक्ति या घर का वर्णन करना, आदि इस स्तर के छात्रों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण रचनात्मक दक्षता है। लिखने को सहज बनाने में पत्र लेखन एक उपयोगी प्रक्रिया हो सकती है। यह बच्चों को मौखिक रूप से सीखी गई भाषा का उपयोग करने का अवसर देता है और उन्हें वाक्यों को जोड़ने एवं उसके क्रम के साथ परिचित भी कराता है। इससे पत्र का ढाँचा समझने, उसे लिखने व उसकी प्रक्रिया और उद्देश्य को समझने में मदद मिलती है। इस सन्दर्भ में कक्षा तीन के बच्चों द्वारा शुरुआती पत्र लेखन के कुछ नमूने देखे जा सकते हैं। (चित्र 6)

जैसे-जैसे लेखन का विकास होता है उसी तरह से विचारों में भी उत्तरोत्तर प्रगति होती नज़र आती है। फिर ये विचार ही उसके लेखन को बेहतर और परिष्कृत करते चलते हैं– सरल वाक्यों से साधारण विवरणों तक, फिर उससे आगे विस्तृत विवरणों और संवादों तक। भाषा परिवेश में बिखरी पड़ी है। उसका उपयोग करते हुए नए शब्दों से गुज़रना और उनका उचित प्रयोग करना भी ज़रूरी है।

लेखन के दौरान की उधेड़बुन

शिक्षार्थी अपनी रचना के पहले मसौदे या ड्राफ्ट को लिखते हैं। संशोधन की प्रक्रिया तब शुरू होती है जब छात्रों के पास एक स्तर का काम पूरा हो चुका होता है। इसमें तैयार हुए पाठों को देखने और विचारों को पुनः व्यवस्थित

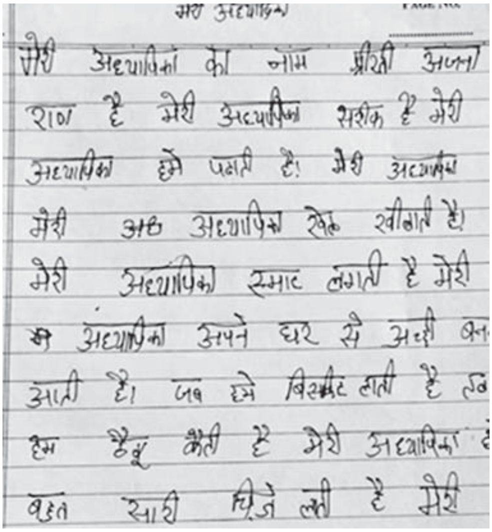
मेरी अद्यापिका

मेरी अद्यापिका का नाम प्रीती अजना
शाा है मेरी अद्यापिका सरीक है मेरी
अद्यापिका हमे पढाती है। मेरी अद्यापिका
मेरी अब अद्यापिका खेल खीलाती है।
मेरी अद्यापिका स्माट लगती है मेरी
अद्यापिका अपने घर से अच्छी बन
आती है। जब हमे बिस्कुट लाती है तब
हम हैप्पू कैती है मेरी अद्यापिका
बहुत सारी चिजे लती है मेरी

चित्र 7

करने, वाक्यों को जोड़ने, बदलने या हटाने का काम किया जाता है। यह काम बच्चों के साथ मिलकर किया जाता है। किसी मुद्दे या विषय पर समूह में और व्यक्तिगत रूप से गहराई से बात करने पर अलग-अलग तरह के जवाब आते हैं। यह भी कि मौखिक संवाद में अधिक विचार आते हैं, लिखित में शब्दों, वाक्यों और विराम चिह्नों की उधेड़बुन में विचार और भाव सीमित होते जाते हैं। अतः बेहतर लिखने में यह काफ़ी मददगार होता है कि उस विषय पर पहले बातचीत कर ली जाए।

यह भी देखा गया है कि किसी विषय के जवाब कम पंक्तियों में लिखने के टास्क पर बच्चे बेहतर और व्यवस्थित क्रम में लिखते हैं। अधिक लिखने की स्थिति में बोरियत महसूस करते हैं और यदि विषय रोचक न हो तो वे लिखना बीच में ही छोड़ देते हैं। बच्चों के सोचने और कोशिश करने में शिक्षक को मार्गदर्शक की भूमिका में रहना चाहिए। वे बच्चों को कोई संकेत दे सकते हैं और उनसे आगे भी प्रश्न पूछ सकते हैं, और इस तरह उन्हें ज़्यादा गहराई से

सोचने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं, साथ ही उन्हें उत्तर ढूँढ़ने और ख़ुद के अधिगम की ज़िम्मेदारी उठाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

संशोधन की इस प्रक्रिया में फ़ीडबैक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। फ़ीडबैक ऐसा हो, जिससे लेखन के प्रति छात्रों में एक सकारात्मक दृष्टिकोण बने। ड्राफ्ट पर फ़ीडबैक देते समय निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखा जा सकता है। छात्र के पास कहानी के लिए क्या विचार था, छात्र ने संवाद कैसे लिखे, क्या छात्र ने रिपोर्ट के मुख्य बिन्दुओं को लिखा था, क्या छात्र ने व्यवस्थित क्रम में लिखने का अच्छा प्रयास किया था? इस बात पर ध्यान देने की ज़रूरत है कि फ़ीडबैक अस्पष्ट या पक्षपाती न हो, नहीं तो बच्चे सीखना बन्द कर सकते हैं। हर एक छात्र को व्यक्तिगत रूप से अलग-अलग फ़ीडबैक देना भी काफ़ी मददगार हो सकता है। यह फ़ीडबैक मौखिक या लिखकर दिया जा सकता है। इस प्रक्रिया में छात्र किए गए काम का एक दूसरे से आदान-प्रदान कर सकते हैं और उसपर टिप्पणी भी कर सकते हैं। जाँच के काम को सबसे पहले छात्रों द्वारा स्वयं से, उसके बाद छात्रों के समूह में, मित्रों व बड़े भाई-बहन द्वारा और फिर शिक्षकों द्वारा किया जाना चाहिए।

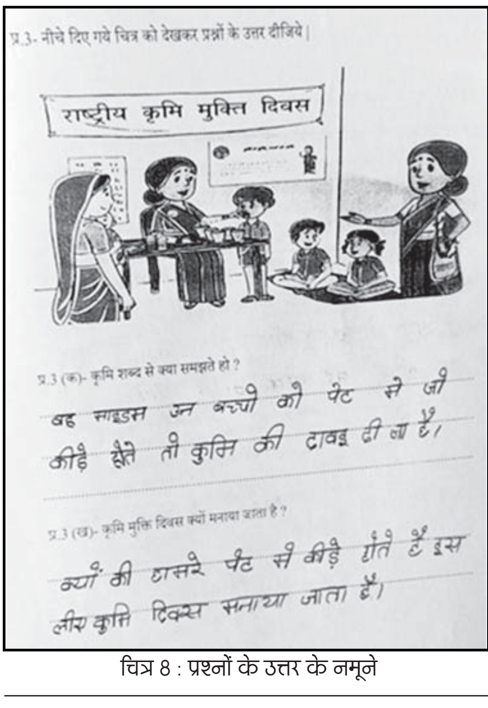

चित्र 8 : प्रश्नों के उत्तर के नमूने

चित्र 9

लेखन को अन्तिम रूप देना

फ़ीडबैक के अनुरूप संशोधन करने के बाद बच्चे एक और मसौदा लिखते हैं और पुनः संशोधन की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। यह क्रम तब तक नहीं रुकता जब तक कि विचारों के क्रम और सामग्री में एकरूपता नहीं आ जाती। इस प्रकार बच्चे कई ड्राफ्ट लिखने के बाद व्याकरण, वर्तनी और विराम चिह्न को अपनी क्षमता अनुसार जाँच करके काम को व्यवस्थित और फ़ाइनल रूप देते हैं। कहना ग़लत न होगा कि यदि सामान्य बातचीत, चित्र, कविता, कहानी, घटना, अनुभव, यात्रा वृत्तान्त, त्योहार, मेले, भ्रमण, विज्ञापन, पोस्टर, बाल साहित्य, आदि विभिन्न प्रकार के लेखन का अवसर दिया जाता है तो लिखने की प्रक्रिया को रोचक और आकर्षक बनाया जा सकता है। लिखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि लेखन प्रक्रिया में काफ़ी स्तरों पर बातचीत और फिर संशोधनों की पूरी सम्भावना निहित होती है। उसे सही दिशा देने, प्रोत्साहित करने, फ़ीडबैक देने और स्वयं को शामिल करने के दायित्व का निर्वाह करना अति आवश्यक होता है। बच्चों द्वारा किए गए काम को

चित्र 10

चित्र 11

यदि दीवार पत्रिका, बाल अख़बार, बाल पत्रिका के साथ स्कूल के भाषा-समृद्ध वातावरण में चस्पा किया जाता है और उसे दूसरे द्वारा पढ़ा जाता है तो वे उमंग, उल्लास और आत्मविश्वास से लबरेज़ नज़र आते हैं। उनमें यह विश्वास भी जन्म लेता है कि मैं भी बेहतर लिख सकता हूँ और यह समझ बनती जाती है कि बेहतर को अधिक बेहतर बनाने की गुंजाइश हमेशा रहती है।

लेखन की इस पूरी प्रक्रिया से गुज़रते हुए यह प्रयास किया जाना ज़रूरी है कि लिखना केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न होकर जीवन का अभिन्न हिस्सा बन जाए। लिखना सृजनात्मक अभिव्यक्ति है और यह तभी सम्भव हो पाता है जब बच्चों को पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता, समय, अवसर और आज़ादी दी जाती है।

सन्दर्भ

1. लेखन प्रक्रिया में रणनीतिक संरचना पर उद्धरण, *greelane.com/hi/मानविकी/अंग्रेजी/writing-process-composition*
2. लेखन प्रक्रिया, *wikicareer.in/wiki/writing_process*
3. खानसिर, अली अकबर, *भारत में भाषा Jul 2012, अंक 7*
4. *भाषा और साक्षरता (प्रामाणिक लेखन)* : TESS-India.edu.in
5. *लेखन कौशल - विकास एवं मॉनीटरिंग* : TESS-India.edu.in
6. *सीखने के प्रतिफल,* एनसीईआरटी, 2017
7. कुमार कृष्ण : *बच्चों की भाषा और अध्यापक,* नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

अवनीश कुमार मिश्र विगत पाँच वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के बाद एक वर्ष तक सहायक प्रोफ़ेसर के रूप में हिन्दी साहित्य विषय में अपनी सेवाएँ दी हैं। भाषा और साहित्य से जुड़े अनेक शोध पत्र लिखे हैं। पढ़ने-लिखने में निरन्तर दत्तचित्त रहते हैं। तीन साल से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में काम कर रहे हैं।

सम्पर्क : avanish.mishra@azimpremjifoundation.org